

Archivo Narrow Devanagari **Regular**

Archivo Narrow Devanagari **Bold**

दादासाहब फालके

http://hi.wikipedia.org/s/vpe

मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया से

धुडिराज गोविन्द फालके उपाख्य दादासाहब फालके (मराठी

: दादासाहेब फाळके) (अप्रैल, - फरवरी,)

वह महापुरुष हैं जिन्हें भारतीय फिल्म उद्योग का 'पितामह' कहा

जाता है।

दादा साहब फालके, सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट से प्रशिक्षित

सृजनशील कलाकार थे। वह मंच के अनुभवी अभिनेता थे, शौकिया

जादूगर थे। कला भवन **बडौदा** से फोटोग्राफी का एक पाठ्यक्रम

भी किया था। उन्होंने फोटो केमिकल प्रिंटिंग की प्रक्रिया में भी

प्रयोग किये थे। प्रिंटिंग के जिस कारोबार में वह लगे हुए थे, 1910

में उनके एक साझेदार ने उससे अपना आर्थिक सहयोग वापस ले

लिया। उस समय इनकी उम्र 40 वर्ष की थी कारोबार में हुई हानि

से उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था। उन्होंने क्रिसमस के अवसर

पर 'ईसामसीह' पर बनी एक फिल्म देखी। फिल्म देखने के दौरान

ही फालके ने निर्णय कर लिया कि उनकी जिंदगी का मकसद

फिल्मकार बनना है। उन्हें लगा कि रामायण और महाभारत जैसे

पौराणिक महाकाव्यों से फिल्मों के लिए अच्छी कहानियां मिलेंगी।

उनके पास सभी तरह का हुनर था। वह नए-नए प्रयोग करते थे।

अतः प्रशिक्षण का लाभ उठाकर और अपनी स्वभावगत प्रकृति के

चलते प्रथम भारतीय चलचित्र बनाने का असंभव कार्य करनेवाले

वह पहले व्यक्ति बने।

उन्होंने 5 पौंड में एक रास्ता कैमरा खरीदा और शहर के सभी

सिनेमाघरों में जाकर फिल्मों का अध्ययन और विश्लेषण किया।

फिर दिन में 20 घंटे लगकर प्रयोग किये। ऐसे उन्माद से काम करने

का प्रभाव उनकी सेहत पर पड़ा। उनकी एक आंख जाती रही। उस

समय उनकी पत्नी सरस्वती बाई ने उनका साथ दिया। सामाजिक

निष्कासन और सामाजिक गुस्से को चुनौती देते हुए उन्होंने अपने

जेवर गिरवी रख दिये (40 साल बाद यही काम सत्यजित राय

की पत्नी ने उनकी पहली फिल्म 'पाथेर पांचाली' बनाने के लिए

किया)। उनके अपने मित्र ही उनके पहले आलोचक थे। अतः

अपनी कार्यकुशलता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने एक बर्तन में

मटर बोई। फिर इसके बढ़ने की प्रक्रिया को एक समय में एक फ्रेम

खींचकर साधारण कैमरे से उतारा। इसके लिए उन्होंने टाइमैप्स

फोटोग्राफी की तकनीक इस्तेमाल की। इस तरह से बनी अपनी

Genre: कॉमेडी ड्रामा

Director: अजय भुयान

Plot: 'अमित साहनी की लिस्ट' से हमने बहुत ज्यादा

उम्मीदें नहीं थी, लेकिन जब हम सिनेमाहाल के भीतर

घुसे तो पहले से तय की हुई धारणायें टूट गईं।

'अमित साहनी की लिस्ट' से हमने बहुत ज्यादा उम्मीदें नहीं थी,

लेकिन जब हम सिनेमाहाल के भीतर घुसे तो पहले से तय की हुई

धारणायें टूट गईं। क्या ऐसे हो सकता है कि कोई शख्स अपनी लाइफ

पार्टनर को चुनने के लिए लिस्ट बनाए कि उसमें क्या खूबी होनी चाहिए? क्या

ऐसा मुमकिन है कि आपकी लिस्ट में जो फिट बैठे उससे ही आपको प्यार हो

जाए? क्या किसी लड़की को महज पहले से तय मानकों के आधार पर ही चुना

जाना चाहिए? ऐसे कई ऊल-जलूल सवाल हैं जो 'अमित साहनी की लिस्ट' में

आपको गुदगुदाने के लिए मौजूद हैं।

कहानी: अमित साहनी (वीर दास) एक उलझा हुआ शख्स है, जिसने अपनी

लाइफ पार्टनर के लिए एक निश्चित खांचा तय किया हुआ है, कि उसमें

क्या-क्या खूबी हो। अमित पेशे से एक इन्वेस्टमेंट बैंकर है। 30 साल से ज्यादा

की उम्र पार कर चुके अमित की मां चाहती है कि वह जल्द शादी कर ले,

जबकि अमित को एक ऐसी लड़की चाहिए जिसमें वे सारे गुण हों, जो उसकी

बनाई लिस्ट में पहले से दर्ज हैं। अमित को अपने लिए ऐसी ही ड्रीम गर्ल की

तलाश है जो उसके तय खांचे में फिट बैठे। अमित जब भी किसी लड़की के

साथ डेटिंग पर जाता, तो वह लड़की की खासियत अपनी लिस्ट से मिलाने

लगाता। जब अमित को अपनी लिस्ट से मैच करती कोई परफेक्ट लड़की नहीं

मिलती तो वह एक दिन अपनी मां की बताई लड़की माला (वेगा) से मिलता

Movie Review:

'अमित साहनी की लिस्ट'

है। चंद मुलाकातों के बाद उसे महसूस होने लगता है कि बेशक माला में वह सारी खूबियां

नहीं जो उसकी लिस्ट में दर्ज हैं, बावजूद इसके उसे माला से इश्क हो जाता है। कुछ ही

मुलाकातों के बाद अमित और माला आपसी रजामंदी से सगाई भी कर लेते हैं, लेकिन

तभी अमित की मुलाकात देविका (अनंदिता नायर) से होती है। देविका से मिलकर अमित

को लगता है कि उसमें वह सभी खूबियां हैं, जो उसकी लिस्ट में दर्ज हैं और यही उसके लिए

परफेक्ट है। इसके बाद की कहानी अमित साहनी की लिस्ट के पूरा होने न होने के इर्द-गिर्द

ही घूमती है। क्या अमित साहनी की शादी माला से होती है? क्या वह माला को अपनी लिस्ट

की सच्चाई बता पाता है? क्या अमित देविका से शादी कर लेता है? क्या देविका और माला

को समझाने में अमित सफल हो पाता है? इन्हीं तमाम सवालों के जवाब देते हुए फिल्म

अपने अंत तक पहुंचती है।

एक्टिंग: वीर दास एक बेहतरीन एक्टर हैं। अमित साहनी के रोल में वीरदास जमे हैं। माला

के रोल में वेगा ने भी अच्छा अभिनय किया है, जबकि देविका के रोल में अनंदिता नायर

कुछ खास नहीं कर सकीं। अमित के रूममेट पुष्कर के किरदार को कवि शास्त्री ने अपनी

अदाकारी से जीवंत ज़रूर बना दिया।

डायरेक्शन: अजय भुयान ने 'अमित साहनी की लिस्ट' को अलग और नए अंदाज में पर्दे

पर उतारा है। इंटरवल से पहले फिल्म कई जगहों पर ज़रूर उबाऊ लगती है, लेकिन धीरे-धीरे

यह अपने ट्रैक पर लौट आती है। अजय भुयान ने अपने कैमरे में कई खूबसूरत लोकेसंस

को कैद किया है।

	090	091	092	093	094	095	096	097
0	ै	ऐ	ठ	र	ी	ॐ	ऋ	०
1	ँ	ऑ	ड	र	ु	ं	लृ	
2	ं	ओ	ढ	ल	ू	०	०	अँ
3	ं:	ओ	ण	ळ	ूर्	०	०	अं
4	ऐ	औ	त	ळ	ृ	०	।	आँ
5	अ	क	थ	व	०	०	॥	औ
6	आ	ख	द	श	े	ु		अु
7	इ	ग	ध	ष	े	ु		अु
8	ई	घ	न	स	ै	क		✕
9	उ	ड	न	ह	ॉ	ख		ज़
A	ऊ	च	प	ं	ो	ग		
B	ऋ	छ	फ	ी	ो	ज		ग्र
C	लृ	ज	ब	्	ौ	ड		ज्र
D	ँ	झ	भ	ऽ	्	ढ		?
E	ऐ	ञ	म	ा	ि	फ़		इ
F	ए	ट	य	ि	ौ	य		ब

	090	091	092	093	094	095	096	097
0	ै	ऐ	ठ	र	ी	ॐ	ऋ	०
1	ँ	ऑ	ड	र	ु	ं	लृ	
2	ं	ओ	ढ	ल	ू	०	०	अँ
3	ं:	ओ	ण	ळ	ूर्	०	०	अं
4	ऐ	औ	त	ळ	ृ	०	।	आँ
5	अ	क	थ	व	०	०	॥	औ
6	आ	ख	द	श	े	ु		अु
7	इ	ग	ध	ष	े	ु		अु
8	ई	घ	न	स	ै	क		✕
9	उ	ड	न	ह	ॉ	ख		ज़
A	ऊ	च	प	ं	ो	ग		
B	ऋ	छ	फ	ी	ो	ज		ग्र
C	लृ	ज	ब	्	ौ	ड		ज्र
D	ँ	झ	भ	ऽ	्	ढ		?
E	ऐ	ञ	म	ा	ि	फ़		इ
F	ए	ट	य	ि	ौ	य		ब